यू. पी.-पीसीएस मुख्य परीक्षा 2024

सामान्य अध्ययन - I

प्रश्न-पत्र - IV

खंड - अ

प्रश्न.1 व्यक्तिगत नैतिकता और सामाजिक अपेक्षाओं के बीच की खाई को पाटने में नैतिक मूल्यों की भूमिका पर चर्चा करें।

उत्तर– नैतिक मूल्य ऐसे नैतिक मार्गदर्शक होते हैं जो मानव व्यवहार को दिशा देते हैं। ये व्यक्तिगत अंतःकरण (व्यक्तिगत नैतिकता) और समाज की व्यापक मान्यताओं एवं अपेक्षाओं के बीच सामंजस्य स्थापित करते हैं। ये सुनिश्चित करते हैं कि व्यक्ति के निर्णय सामाजिक व्यवस्था से टकराव में न होकर, सामूहिक कल्याण में सहायक हो।

व्यक्तिगत नैतिकता और सामाजिक अपेक्षाओं के बीच सेतु के रूप में नैतिक मूल्यः

1. **साझा नैतिक आधारः** ईमानदारी, न्याय, करुणा और उत्तरदायित्व जैसे नैतिक मूल्य वह साझा आधार बनाते हैं जिस पर व्यक्ति अपनी नैतिक मान्यताओं को समाज की अपेक्षाओं के अनुरूप ढालते हैं।
2. **सामंजस्य और सामाजिक व्यवस्था को बढ़ावाः** जब व्यक्ति नैतिक आचरण करते हैं, तो यह विश्वास, सहयोग और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व को बढ़ावा देता है, जिससे व्यक्तिगत स्वतंत्रता और सामाजिक नियमों के बीच संघर्ष कम होता है।
3. **सामाजिक नियमों का आंतरिक रूप से आत्मसात करनाः** नैतिक मूल्य व्यक्ति को सामाजिक नियमों को केवल कर्तव्य भाव से नहीं, बल्कि अपने नैतिक पहचान के रूप में आत्मसात करने में सहायता करते हैं। उदाहरणः गांधीजी का "अहिंसा" का सिद्धांत, जिसमें उनका व्यक्तिगत विश्वास भारत की स्वतंत्रता की सामूहिक लड़ाई के साथ जुड़ गया।
4. **नैतिक आदर्श और सामाजिक प्रेरणाः** नैतिक व्यक्ति, नैतिक आदर्श बनकर समाज में परिवर्तन की प्रेरणा देते हैं और एक सद्गुण चक्र (virtuous cycle) प्रारंभ करते हैं। **उदाहरणः** डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम की विनम्रता और ईमानदारी ने उनकी व्यक्तिगत नैतिकता के साथ-साथ सार्वजनिक सेवा के सामाजिक आदर्श को भी दर्शाया।
5. **लचीलापन और प्रगतिशीलताः** नैतिक मूल्य समाज के साथ विकसित होते हैं। जैसे-जैसे व्यक्ति लैंगिक समानता और एलजीबीटीक्यू+ अधिकारों का समर्थन करते हैं, वैसे-वैसे सामाजिक अपेक्षाएँ और कानून भी बदलते हैं, जिससे यह अंतर धीरे-धीरे पाटा जाता है।

नैतिक मूल्य व्यक्तिगत और सामूहिक जीवन के बीच **मध्यस्थ** की तरह कार्य करते हैं। ये समाज को **न्यायपूर्ण, समावेशी और मानवतावादी** बनाने में सहायक होते हैं, साथ ही व्यक्ति की स्वतंत्रता को भी बनाए रखते हैं। जैसा कि **इम्मैनुएल कांट** ने कहा थाः "केवल उसी सिद्धांत के अनुसार कार्य करो, जिसे तुम चाहो कि वह सार्वभौमिक नियम बन जाए।" यह विचार दर्शाता है कि व्यक्तिगत नैतिकता को **सार्वभौमिक भलाई** से मेल खाना चाहिए।

✓ Download the model answers of the test paper from www.chronicleias.in
✓ Watch the detailed video discussions of the questions in our website www.chronicleias.in
✓ For more details, call: 9953007636/9953007637 or WhatsApp: 9582219048

प्रश्न.2 मानवीय मूल्यों के संदर्भ में 'नैतिक सापेक्षवाद' की अवधारणा की व्याख्या करें। यह अवधारणा सार्वभौमिक नैतिक मानकों को सुनिश्चित करने में किस प्रकार चुनौतियां पैदा कर सकती है?

उत्तर- नैतिक सापेक्षवाद एक दार्शनिक दृष्टिकोण है, जिसके अनुसार नैतिक सिद्धांत और मूल्य सार्वभौमिक नहीं होते, बल्कि वे उस सांस्कृतिक, सामाजिक या व्यक्तिगत दृष्टिकोण पर आधारित होते हैं, जिनसे वे उत्पन्न होते हैं। जो एक समाज में नैतिक रूप से सही माना जाता है, वही किसी अन्य समाज में गलत माना जा सकता है – यह भिन्नता ऐतिहासिक, धार्मिक या सामाजिक संदर्भों पर निर्भर करती है।

नैतिक सापेक्षवाद और मानव मूल्यः

1. **संदर्भ-आधारित नैतिकता (Context - Driven Morality):** नैतिक सापेक्षवाद मानव मूल्यों की विविधता को स्वीकार करता है। जो एक संस्कृति में सद्गुण (जैसे बहुपतित्व या मृत्युदंड) माना जाता है, वही किसी अन्य में अनैतिक हो सकता है।
   उदाहरणः स्वतंत्र अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को उदार लोकतंत्रों में अत्यधिक महत्व दिया जाता है, जबकि कुछ धर्मतंत्रों या अधिनायकवादी राज्यों में इसे धार्मिक या राज्य सत्ता के नाम पर सीमित किया जाता है।
2. **सहिष्णुता और बहुलवाद (Tolerance and Pluralism):** यह विचार विभिन्न दृष्टिकोणों को समझने और स्वीकारने को बढ़ावा देता है, जिससे सांस्कृतिक विविधता के प्रति सम्मान उत्पन्न होता है।

सार्वभौमिक नैतिक मानकों को सुनिश्चित करने में उत्पन्न चुनौतियांः

1. **मानवाधिकार मानदंडों को कमजोर करनाः** नैतिक सापेक्षवाद का उपयोग कभी-कभी हानिकारक परंपराओं को न्यायोचित ठहराने के लिए किया जाता है जैसे - महिला जननांग विकृति, बाल विवाह, या जाति-आधारित भेदभाव, जिन्हें "सांस्कृतिक परंपरा" कहकर सही ठहराया जाता है।
2. **साझा आधार की कमीः** वैश्विक शासन और कूटनीति में नैतिक मुद्दों पर देशों के बीच मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं जैसे - LGBTQ+ **अधिकार, जलवायु न्याय,** या **धार्मिक स्वतंत्रता।**
3. **नैतिक अस्पष्टताः** इससे नैतिक उत्तरदायित्व तय करना कठिन हो सकता है। **उदाहरणः** व्यापार नैतिकता में एक क्षेत्र में भ्रष्टाचार को सामान्य माना जा सकता है, जबकि दूसरे में उसे घोर अनैतिक माना जाएगा।
4. **सार्वभौमिक नैतिकता से टकरावः** दार्शनिक जैसे इमैनुएल कांट और जॉन रॉल्स सार्वभौमिक नैतिक सिद्धांतों और "न्याय की निष्पक्षता" की वकालत करते हैं, जिससे नैतिक सापेक्षवाद का टकराव होता है।

जहाँ नैतिक सापेक्षवाद सांस्कृतिक संवेदनशीलता को प्रोत्साहित करता है, वहीं यह मानवाधिकारों, लैंगिक समानता, और वैश्विक न्याय जैसे क्षेत्रों में सार्वभौमिक नैतिक ढांचे की स्थापना में गंभीर बाधाएं उत्पन्न कर सकता है। इसका समाधान एक संतुलित दृष्टिकोण में है—जहाँ मानव गरिमा, न्याय, और अहिंसा जैसे सार्वभौमिक मूल्यों को बढ़ावा दिया जाए, लेकिन स्थानीय संदर्भों के प्रति संवेदनशीलता भी बनी रहे।

✓ Download the model answers of the test paper from www.chronicleias.in
✓ Watch the detailed video discussions of the questions in our website www.chronicleias.in
✓ For more details, call: 9953007636/9953007637 or WhatsApp: 9582219048

प्रश्न.3 सिविल सेवा के संदर्भ में निम्नलिखित की प्रासंगिकता की जाँच करें:

(a) कार्य संस्कृति (b) सार्वजनिक धन का उचित उपयोग

उत्तर– सिविल सेवा सरकार की नीतियों को लागू करने और जनसेवाओं को प्रभावी ढंग से प्रदान करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसकी प्रभावशीलता और निष्पक्षता मुख्य रूप से एक नैतिक और प्रदर्शन-आधारित कार्य संस्कृति तथा सार्वजनिक धन के विवेकपूर्ण उपयोग पर निर्भर करती है। ये दोनों सुशासन और जन-जवाबदेही के महत्वपूर्ण स्तंभ हैं।

(a) कार्य संस्कृति:

- कार्य संस्कृति से तात्पर्य उन मूल्यों, व्यवहारों, दृष्टिकोणों और नैतिक मानकों से है जो किसी संस्था के कार्य वातावरण को आकार देते हैं। एक सकारात्मक कार्य संस्कृति कार्यकुशलता, समयबद्धता, टीम भावना, नवाचार, ईमानदारी और जवाबदेही को बढ़ावा देती है।
- सिविल सेवा के संदर्भ में, जब अधिकारी एक स्वस्थ कार्य संस्कृति में कार्य करता है, तो वह भ्रष्टाचार व राजनीतिक दबाव का विरोध करता है, जनसेवा को व्यक्तिगत लाभ से ऊपर रखता है तथा योग्यता आधारित प्रणाली और प्रभावी सेवा वितरण को अपनाता है।

उदाहरण: गुजरात और कर्नाटक जैसे राज्यों में ई-गवर्नेंस की सफलताएं काफी हद तक एक प्रेरित, तकनीक-प्रेमी और उत्तरदायी नौकरशाही कार्य संस्कृति के कारण संभव हुई; जिससे डिजिटल उपकरणों को तेजी से अपनाने और नागरिक केंद्रित प्रशासन को बढ़ावा मिला।

(b) सार्वजनिक धन का उचित उपयोग:

- सार्वजनिक धन का उचित उपयोग का अर्थ है कि करदाताओं के पैसे को पारदर्शिता और दक्षता के साथ उसके निर्धारित उद्देश्यों के लिए खर्च किया जाए। यदि इन निधियों का दुरुपयोग होता है, तो इससे भ्रष्टाचार, विकास परियोजनाओं में देरी और शासन में जनता का विश्वास कमजोर हो सकता है।
- सिविल सेवा में अधिकारी सार्वजनिक संसाधनों के संरक्षक होते हैं, जिन्हें यह सुनिश्चित करना होता है कि धन का विवेकपूर्ण और पारदर्शी ढंग से उपयोग हो। इसमें परिणाम-आधारित बजटिंग, लागत-लाभ विश्लेषण, तथा नियमित ऑडिट और निगरानी के माध्यम से रिसाव और गबन को रोकना शामिल है।

उदाहरण: भारत के नियंत्रक और महालेखा परीक्षक (CAG) ने कई बार मनरेगा जैसी योजनाओं में धन के उपयोग में अनियमितताओं को उजागर किया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि बेहतर वित्तीय अनुशासन और जवाबदेही की आवश्यकता है।

एक कल्याणकारी राज्य की रीढ़ बनने के लिए सिविल सेवा में नैतिक कार्य संस्कृति और जिम्मेदार वित्तीय व्यवहार अनिवार्य हैं। ये दोनों मिलकर यह सुनिश्चित करते हैं कि शासन नागरिकों के हित में, पारदर्शी और विकासोन्मुख हो तथा संविधान के मूल आदर्शों की रक्षा हो सके।

✓ Download the model answers of the test paper from www.chronicleias.in
✓ Watch the detailed video discussions of the questions in our website www.chronicleias.in
✓ For more details, call: 9953007636/9953007637 or WhatsApp: 9582219048

प्रश्न.4 नैतिक दुविधा से आप क्या समझते हैं? समझाइए। एक लोक सेवक द्वारा इनका समाधान कैसे किया जा सकता है?

उत्तर- **नैतिक दुविधा** एक ऐसी स्थिति होती है जिसमें किसी व्यक्ति को दो या अधिक परस्पर विरोधी नैतिक मूल्यों या कर्तव्यों के बीच चुनाव करना पड़ता है, और किसी एक को चुनने पर दूसरा मूल्य प्रभावित हो सकता है। ऐसी स्थितियों में सही और गलत का स्पष्ट भेद नहीं होता, इसलिए यह निर्णय लेना जटिल और चुनौतीपूर्ण होता है।

नैतिक दुविधा की समझः

लोक सेवा के संदर्भ में नैतिक दुविधाएं तब उत्पन्न होती हैं जब एक सिविल सेवक को कई कर्तव्यों और मूल्यों के बीच संतुलन बनाना होता है जैसे - कि वरिष्ठ अधिकारियों के प्रति निष्ठा बनाम संविधान के प्रति दायित्व, या फिर व्यक्तिगत मूल्य बनाम संस्थागत नियम।

इनका सामना अक्सर उन स्थितियों में होता है जो "ग्रे जोन" में आती हैं - जैसे जब कोई नियम न्याय देने में देरी करता है या राजनीतिक दबाव जनहित के विपरीत होता है।

उदाहरणः

यदि कोई राजनीतिक नेता किसी अधिकारी से कहे कि वह एक कल्याणकारी योजना में प्रक्रियागत त्रुटियों को नजरअंदाज कर दे ताकि लाभ जल्द लोगों तक पहुँच सके, तो यह एक नैतिक दुविधा बन जाती है – एक ओर कानून और प्रक्रियाओं का पालन, और दूसरी ओर त्वरित जनसेवा।

लोक सेवकों द्वारा समाधानः

नैतिक दुविधाओं को सुलझाने के लिए एक लोक सेवक को सुनियोजित और विवेकपूर्ण दृष्टिकोण अपनाना चाहिए:

- **संवैधानिक मूल्यों** (न्याय, समानता, नैतिकता आदि) का मार्गदर्शन लेना चाहिए।
- **सेवा नियमों** और **आचरण संहिता** का अध्ययन करना चाहिए।
- **वरिष्ठों या नैतिक सलाह समितियों** से परामर्श करना चाहिए।
- उपयोगितावाद (अधिकतम लोगों के लिए अधिकतम भलाई), कर्तव्यपरायण नैतिकता (कर्तव्य-आधारित) या सद्गुण नैतिकता (चरित्र-आधारित) जैसे नैतिक सिद्धांतों को लागू करना आवश्यक है।
- सहानुभूति, तर्कसंगत निर्णय और पारदर्शिता जैसे उपकरणों का उपयोग करना चाहिए।

लोक सेवा में नैतिक दुविधाएं अपरिहार्य हैं, लेकिन एक जिम्मेदार लोक सेवक को इन्हें संविधान, सार्वजनिक हित और नैतिक मूल्यों के आधार पर सुलझाना चाहिए। ऐसा करने से प्रशासन में पारदर्शिता, जवाबदेही और जनविश्वास बना रहता है।

✓ Download the model answers of the test paper from www.chronicleias.in
✓ Watch the detailed video discussions of the questions in our website www.chronicleias.in
✓ For more details, call: 9953007636/9953007637 or WhatsApp: 9582219048

प्रश्न.5 निम्नलिखित में अंतर बताइए:

(a) आचार संहिता और नागरिक चार्टर (b) ईमानदारी और पारदर्शिता

उत्तर- (a) आचार संहिता बनाम नागरिक चार्टर

आयाम	आचार संहिता	नागरिक चार्टर
परिभाषा	सरकारी कर्मचारियों के लिए अपेक्षित आचरण को दर्शाने वाले नियमों और दिशानिर्देशों का समूह।	किसी सरकारी संस्था द्वारा अपनी सेवाओं, मानकों और शिकायत निवारण तंत्र की सार्वजनिक घोषणा।
उद्देश्य	सिविल सेवकों में अनुशासन, ईमानदारी और नैतिक आचरण सुनिश्चित करना।	नागरिकों को सशक्त बनाना और सेवा वितरण को पारदर्शी व उत्तरदायी बनाना।
लक्षित समूह	आंतरिक – सार्वजनिक अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए।	बाह्य – नागरिकों और सेवा प्राप्तकर्ताओं के लिए।
कानूनी स्थिति	प्रायः सेवा नियमों या प्रशासनिक नियमों का हिस्सा होते हैं।	प्रायः बाध्यकारी नहीं होते, लेकिन प्रशासनिक सुधारों का उपकरण होते हैं।
उदाहरण	सिविल सेवा आचरण नियम, 1964	भारतीय रेल या पासपोर्ट सेवा का नागरिक चार्टर।

(b) ईमानदारी बनाम पारदर्शिता

आयाम	ईमानदारी (Probity)	पारदर्शिता (Transparency)
परिभाषा	सार्वजनिक जीवन में उच्च स्तर की ईमानदारी, सत्यनिष्ठा और नैतिकता का पालन।	सरकारी कार्यों और निर्णयों में खुलापन, पहुंच और दृश्यता सुनिश्चित करना।
मुख्य फोकस	व्यक्तियों के नैतिक आचरण और नैतिक मूल्यों पर।	प्रक्रियाओं, दस्तावेजों और निर्णयों की सार्वजनिक दृश्यता पर।
दायरा	व्यक्तिगत नैतिकता, चरित्र, और स्वार्थ टकराव से बचाव को शामिल करता है।	सूचनाओं, दस्तावेजों और निर्णयों की सुलभता और सार्वजनिक जानकारी में उपलब्धता।
महत्व	सार्वजनिक अधिकारियों में विश्वास पैदा करता है और भ्रष्टाचार को रोकता है।	उत्तरदायित्व को बढ़ावा देता है और शक्ति के दुरुपयोग की संभावनाओं को कम करता है।
उदाहरण	संपत्ति की घोषणा करना, व्यक्तिगत हित के मामलों से स्वयं को अलग करना।	सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005 जो सरकारी रिकॉर्ड तक सार्वजनिक पहुंच सुनिश्चित करता है।

✓ Download the model answers of the test paper from www.chronicleias.in
✓ Watch the detailed video discussions of the questions in our website www.chronicleias.in
✓ For more details, call: 9953007636/9953007637 or WhatsApp: 9582219048

प्रश्न.6 एक सिविल सेवक के कार्यों में अभिवृत्ति की क्या भूमिका है? उदाहरण सहित समझाइए।

उत्तर– अभिवृत्ति एक मनोवैज्ञानिक प्रवृत्ति है, जिसमें व्यक्ति किसी विषय या वस्तु के प्रति अनुकूल या प्रतिकूल मूल्यांकन करता है। यह व्यक्ति की धारणा, निर्णय लेने की प्रक्रिया और व्यवहार को प्रभावित करती है। लोक सेवकों के लिए – जो सरकार और आम जनता के बीच सेतु का कार्य करते हैं – अभिवृत्ति प्रशासन को कुशल, नैतिक और उत्तरदायी बनाने में आधारभूत भूमिका निभाती है।

लोक सेवा में अभिवृत्ति की भूमिकाः

(a) **सार्वजनिक सेवा वितरण में सुधारः** एक सकारात्मक और सहानुभूतिपूर्ण अभिवृत्ति यह सुनिश्चित करती है कि लोक सेवक विशेषकर वंचित वर्गों की आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील रहें।
उदाहरणः एक अधिकारी जो सार्वजनिक वितरण प्रणाली का प्रभारी है, वह स्वयं उन लाभार्थियों की पहचान कर सकता है जो किसी त्रुटि के कारण छूट गए हैं, और डेटा में सुधार कर सकता है।

(b) **नैतिक निर्णय लेने में सहायकः** ईमानदारी और निष्ठा से युक्त अभिवृत्ति भ्रष्टाचार, पक्षपात और सत्ता के दुरुपयोग को रोकने में मदद करती है।
उदाहरणः एक जिला मजिस्ट्रेट जो राजनीतिक दबाव के बावजूद निष्पक्ष भूमि अधिग्रहण की प्रक्रिया सुनिश्चित करता है।

(c) **संकट प्रबंधन में सरलताः** दृढ़ और समाधानमुखी अभिवृत्ति लोक सेवकों को संकट के समय भी कुशलतापूर्वक कार्य करने में सक्षम बनाती है।
उदाहरणः कोविड-19 के दौरान कई अधिकारियों ने जोखिम के बावजूद आवश्यक सेवाएं उपलब्ध कराईं, जो उनकी सकारात्मक अभिवृत्ति को दर्शाता है।

(d) **नेतृत्व व टीमवर्कः** सहयोगी और समावेशी अभिवृत्ति विभागों व टीमों के बीच बेहतर समन्वय और मनोबल को बढ़ावा देती है।
उदाहरणः एक जिला अधिकारी जो स्वच्छता अभियान में कनिष्ठ कर्मचारियों व स्वयंसेवकों को शामिल करके अभियान को सफल बनाता है।

लोक सेवा में अभिवृत्ति, केवल योग्यता जितनी ही नहीं, उससे कहीं अधिक महत्वपूर्ण हो सकती है। यह तय करती है कि नीतियाँ और कानून जमीनी स्तर पर किस प्रकार लागू होंगे। सहानुभूति, निष्पक्षता, जवाबदेही और धैर्य जैसी सकारात्मक अभिवृत्तियों के माध्यम से लोक सेवक प्रशासन और नागरिकों के बीच की दूरी को कम कर सकते हैं और सुशासन को मजबूती प्रदान कर सकते हैं।

✓ Download the model answers of the test paper from www.chronicleias.in
✓ Watch the detailed video discussions of the questions in our website www.chronicleias.in
✓ For more details, call: 9953007636/9953007637 or WhatsApp: 9582219048

प्रश्न.7 एक सिविल सेवक द्वारा निर्णय लेने में निष्पक्षता कैसे सुनिश्चित की जा सकती है। चर्चा करे

उत्तर– निर्णय लेने में वस्तुनिष्ठता का अर्थ है तथ्यों, नियमों और योग्यता के आधार पर निर्णय लेना, न कि व्यक्तिगत पूर्वाग्रह, भावनाओं या बाहरी दबावों के आधार पर। लोक सेवकों के लिए वस्तुनिष्ठता एक मूल नैतिक मूल्य है, जो प्रशासन में निष्पक्षता, तटस्थता और ईमानदारी सुनिश्चित करती है।
यह लोक विश्वास बनाए रखने, कानून के शासन की रक्षा करने और समान व न्यायपूर्ण शासन देने के लिए अत्यंत आवश्यक है।

निर्णय लेने में वस्तुनिष्ठता सुनिश्चित करने के उपाय:

(a) **नियमों और प्रक्रियाओं का पालन:** लोक सेवकों को निर्णय हमेशा विधिसम्मत कानूनों, नियमों और नीति दिशानिर्देशों के आधार पर लेने चाहिए, जिससे सभी को समान व्यवहार मिले।
उदाहरण: जाति प्रमाण पत्र जारी करते समय या लाभार्थियों का चयन करते समय अधिकारी को पात्रता मानदंडों का पालन करना चाहिए, न कि सामाजिक या राजनीतिक दबावों का।

(b) **साक्ष्य-आधारित दृष्टिकोण:** डेटा, अनुसंधान और प्रभाव मूल्यांकन का उपयोग कर निर्णय लिए जाएं, जिससे व्यक्तिगत धारणाओं से बचा जा सके।
उदाहरण: मनरेगा जैसी योजनाओं में संसाधनों का आवंटन गरीबी और बेरोजगारी के आंकड़ों के आधार पर हो, न कि राजनीतिक जुड़ाव के आधार पर।

(c) **निष्पक्षता और तटस्थता:** राजनीतिक रूप से तटस्थ रहना और हित समूहों के अनुचित प्रभाव से बचना वस्तुनिष्ठ निर्णय सुनिश्चित करता है।
उदाहरण: भर्ती या पदोन्नति की प्रक्रिया में पारदर्शी मानकों का पालन कर निष्पक्षता बनी रहती है।

(d) **संरचित निर्णय उपकरणों का प्रयोग:** चेकलिस्ट, मानक संचालन प्रक्रिया (SOP) और निर्णय मैट्रिक्स का उपयोग करने से अस्पष्टता और व्यक्तिगत पक्षपात की संभावना कम होती है।

(e) **नैतिकता और भावनात्मक बुद्धिमत्ता में प्रशिक्षण:** नैतिक तर्क, सहानुभूति और संघर्ष समाधान में नियमित प्रशिक्षण से अधिकारी तार्किक सोच के साथ मानवीय पक्ष को भी संतुलित कर पाते हैं।

(d) **जवाबदेही की व्यवस्था:** वरिष्ठ अधिकारियों की समीक्षा, नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (CAG) द्वारा लेखा परीक्षा, सूचना का अधिकार (RTI), और जन शिकायत निवारण तंत्र निर्णयों को जांच के दायरे में रखते हैं, जिससे वस्तुनिष्ठता बढ़ती है।

वस्तुनिष्ठता, लोक सेवकों के नैतिक और व्यावसायिक आचरण की नींव है। एक लोक सेवक को निर्णय लेने में कानूनी जागरूकता, विश्लेषणात्मक क्षमता और व्यक्तिगत ईमानदारी का समन्वय करना चाहिए ताकि उसके निर्णय निष्पक्ष, न्यायसंगत और जनहित में हों। अंततः, वस्तुनिष्ठता शासन में जन विश्वास को मजबूत करती है और लोक सेवा की विश्वसनीयता को बढ़ाती है।

✓ Download the model answers of the test paper from www.chronicleias.in
✓ Watch the detailed video discussions of the questions in our website www.chronicleias.in
✓ For more details, call: 9953007636/9953007637 or WhatsApp: 9582219048

प्रश्न.8 **सिविल सेवकों को पर्दे के पीछे रहकर पूर्ण राजनीतिक निष्पक्षता के साथ कार्य करना चाहिए। टिप्पणी करें।**

उत्तर- लोकतंत्र में लोक सेवक स्थायी कार्यपालिका का हिस्सा होते हैं, जिनसे संविधान, विधि के शासन और जनकल्याण को बनाए रखने की अपेक्षा की जाती है। "पर्दे के पीछे कार्य करना" का तात्पर्य है कि वे चुनी हुई सरकारों के लिए एक निष्पक्ष, सहयोगी भूमिका निभाते हैं, जबकि राजनीतिक तटस्थता यह सुनिश्चित करती है कि शासन व्यवस्था निष्पक्ष, नैतिक और सत्ताधारी दल से स्वतंत्र बनी रहे।

राजनीतिक तटस्थता की आवश्यकता:

(a) **निष्पक्ष शासन की गारंटी:** राजनीतिक तटस्थता यह सुनिश्चित करती है कि सेवाएं, कल्याणकारी योजनाएं और प्रशासनिक क्रियाएं पक्षपात या भेदभाव के बिना समान रूप से सभी को मिलें।
उदाहरण: एक तटस्थ अधिकारी यह सुनिश्चित करता है कि आपदा राहत सभी समुदायों तक पहुंचे, न कि केवल वोट बैंक तक।

(b) **जन विश्वास:** राजनीतिक रूप से पक्षपाती लोक सेवा से नागरिकों का प्रशासन में भरोसा कम होता है। तटस्थता नौकरशाही की निष्पक्ष और भरोसेमंद छवि को मजबूत करती है।

(c) **शासन में निरंतरता:** राजनीतिक नेता तो चुनावों के साथ बदलते रहते हैं, लेकिन लोक सेवक प्रशासनिक स्मृति और नीतिगत निरंतरता प्रदान करते हैं। तटस्थता यह सुनिश्चित करती है कि वे सभी सरकारों की सेवा समान समर्पण के साथ करें।

(d) **संवैधानिक नैतिकता:** लोक सेवक संविधान की शपथ लेते हैं, किसी पार्टी या नेता की नहीं। संवैधानिक मूल्यों की रक्षा के लिए राजनीतिक विचारधाराओं से दूरी बनाए रखना आवश्यक है।

लोक सेवकों का कार्य सलाह देना, नीतियों को लागू करना और प्रशासन चलाना होता है–बिना प्रसिद्धि की चाह के। उनका उद्देश्य तथ्यों पर आधारित नीति निर्माण को सक्षम बनाना, ईमानदारी और दक्षता के साथ प्रशासन करना तथा राजनीतिक नेतृत्व को सहयोग देना होता है, न कि राजनीतिक प्रचार में शामिल होना।
उदाहरण: चुनाव आयोग स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव सुनिश्चित करने के लिए राजनीतिक रूप से तटस्थ अधिकारियों पर निर्भर करता है, जो किसी दल से सार्वजनिक रूप से संबद्ध नहीं होते।

राजनीतिक तटस्थता के समक्ष चुनौतियां:

- राजनीतिक प्रतिशोध के रूप में बार-बार तबादले।
- पदोन्नति या मनचाही तैनाती के लिए सत्ताधारी दल के साथ मेल बिठाने का दबाव।
- विशेष रूप से उच्च नौकरशाही में नियुक्तियों का राजनीतिकरण।

राजनीतिक तटस्थता और पर्दे के पीछे काम करना एक सक्षम, नैतिक और लोकतांत्रिक लोक सेवा के आधारभूत सिद्धांत हैं। सुशासन के लिए आवश्यक है कि लोक सेवक मूक संचालक की भूमिका निभाएं, जो बदलते राजनीतिक परिदृश्य के बीच भी अपनी कुशलता, ईमानदारी और गैर-पक्षपात के साथ शासन तंत्र को स्थिरता प्रदान करें।

✓ Download the model answers of the test paper from www.chronicleias.in
✓ Watch the detailed video discussions of the questions in our website www.chronicleias.in
✓ For more details, call: 9953007636/9953007637 or WhatsApp: 9582219048

प्रश्न.9 भावनात्मक बुद्धिमत्ता प्रशासन की छवि बनाती है और इसकी नींव को भी मजबूत करती है। एक सिविल सेवक के संदर्भ में इस कथन पर चर्चा करें

उत्तर– भावनात्मक बुद्धिमत्ता (Emotional Intelligence - EI) का अर्थ है अपनी तथा दूसरों की भावनाओं को समझने, नियंत्रित करने और उनके प्रति संवेदनशील प्रतिक्रिया देने की क्षमता। लोक सेवकों के संदर्भ में, यह केवल एक व्यक्तिगत गुण नहीं, बल्कि एक व्यावसायिक आवश्यकता है। यह उनके जनता के साथ व्यवहार, टीम प्रबंधन, संकट समाधान आदि को प्रभावी बनाती है– जिससे प्रशासन की छवि और संगठनात्मक नींव दोनों मजबूत होते हैं।

EI और प्रशासन की छवि:

(a) **नागरिक-केन्द्रित शासन को बढ़ावा:** उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता वाला लोक सेवक जनभावनाओं के प्रति सहानुभूतिशील और उत्तरदायी होता है। इससे प्रशासन की छवि मानवीय और संवेदनशील बनती है। **उदाहरण:** मणिपुर में आईएएस अधिकारी आर्मस्ट्रॉन्ग पामे द्वारा अपने प्रयासों से एक सुदूर गांव में सड़क बनवाना, जनकल्याण के प्रति उनके भावनात्मक जुड़ाव का परिचायक था।

(b) **संवाद और संघर्ष समाधान में सहायक:** EI युक्त अधिकारी बेहतर संवाद कर सकते हैं और जमीन विवाद या सांप्रदायिक तनाव जैसे मुद्दों को बिना टकराव के सुलझा सकते हैं।

(c) **सार्वजनिक विश्वास का निर्माण:** धैर्य, समझ और विनम्रता दर्शाने वाले अधिकारियों से नागरिक अधिक सहज महसूस करते हैं, जिससे प्रशासन में भरोसा बढ़ता है।

EI और प्रशासनिक नींव की मजबूती:

(a) **टीम भावना और प्रेरणा में वृद्धि:** EI वाला अधिकारी अधीनस्थों को प्रेरित कर सकता है, टीमवर्क को बढ़ावा देता है, और दबावपूर्ण परिस्थितियों में भी तनाव को कम करता है। **उदाहरण:** चक्रवात के बाद एक जिला अधिकारी द्वारा शांत नेतृत्व व भावनात्मक सहयोग के माध्यम से आपदा प्रबंधन को कुशलता से संभालना।

(b) **नैतिक और मूल्य-आधारित निर्णय:** EI, ऐसे संतुलित निर्णय लेने में मदद करता है जो केवल कानूनी नहीं, बल्कि मानवीय दृष्टिकोण से भी उचित हों – जिससे नैतिक शासन को बढ़ावा मिलता है।

(c) **लचीलापन और अनुकूलन क्षमता:** लोक सेवकों को अक्सर अनिश्चितता, संकट और राजनीतिक दबावों का सामना करना पड़ता है। EI उन्हें संयमित, दृढ़ और सकारात्मक बनाए रखता है – जिससे प्रशासन में स्थिरता आती है।

जनसेवा की भावनात्मक जटिलताओं से भरी दुनिया में, भावनात्मक बुद्धिमत्ता एक मौन शक्ति है, जो प्रशासन की छवि को मानवीय बनाती है और प्रभावशीलता को मजबूती देती है। यह केवल संवेदना ही नहीं, बल्कि नेतृत्व, नैतिकता और सार्वजनिक विश्वास की रीढ़ है। एक लोक सेवक के लिए नीति, कानून और प्रक्रिया जितने महत्वपूर्ण हैं, उतनी ही भावनात्मक बुद्धिमत्ता भी – यह सुशासन का आधार स्तंभ बन जाती है।

✓ Download the model answers of the test paper from www.chronicleias.in
✓ Watch the detailed video discussions of the questions in our website www.chronicleias.in
✓ For more details, call: 9953007636/9953007637 or WhatsApp: 9582219048

प्रश्न.10 सहमति एक ऐसा कौशल है जिसके लिए एक सिविल सेवक के लिए दृष्टिकोण और योग्यता दोनों की आवश्यकता होती है। उचित तर्कों के साथ समझाएं।

उत्तर- सहमति (Persuasion) का अर्थ है दूसरों को समझदारी, विश्वास और भावना के साथ किसी कार्य या विचार की ओर प्रेरित करना। लोक सेवकों के लिए यह एक अत्यंत महत्वपूर्ण कौशल है, जो नीतियों को प्रभावी ढंग से लागू करने, हितधारकों को जोड़ने और सार्वजनिक भलाई को सुनिश्चित करने में सहायक होता है। यह क्षमता अभिवृत्ति (attitude) – यानी मानसिक प्रवृत्ति – और योग्यता (aptitude) – यानी तार्किक एवं संप्रेषणीय क्षमता – दोनों पर आधारित होती है।

सहमति में अभिवृत्ति की भूमिका:

(a) **सहानुभूति और भावनात्मक बुद्धिमत्ता:** एक संवेदनशील लोक सेवक दूसरों की भावनाओं और चिंताओं को बेहतर समझ पाता है, जिससे उसकी सहमति अधिक प्रामाणिक और स्वीकार्य बनती है।
उदाहरण: यदि एक अधिकारी ग्रामीण जनता को टीकाकरण जैसे स्वास्थ्य उपायों के लिए प्रेरित करता है और यह दिखाता है कि वह वास्तव में उनकी भलाई चाहता है, तो लोग अधिक सहजता से उसका अनुसरण करेंगे।

(b) **ईमानदारी और नैतिक प्रतिबद्धता:** एक लोक सेवक की विश्वसनीयता उसकी ईमानदारी और जनसेवा के प्रति समर्पण से बनती है। जब जनता किसी अधिकारी को ईमानदार और निष्पक्ष मानती है, तो वह उसके सुझावों को आसानी से स्वीकार कर लेती है।
उदाहरण: जब एक अधिकारी नीति सुधारों को लागू करने के लिए जनता को समझाता है, तो उसकी नैतिक छवि उस प्रक्रिया को आसान बना देती है।

सहमति में योग्यता की भूमिका:

(a) **विश्लेषणात्मक और संवाद कौशल:** एक सक्षम लोक सेवक जटिल नीतियों को तर्कसंगत, सरल और प्रभावशाली ढंग से समझा सकता है।
उदाहरण: एक नई कल्याण योजना के लाभों को आंकड़ों और सरल भाषा में स्थानीय समुदाय को समझाना, जिससे लोग उसका लाभ उठाने के लिए प्रेरित हों।

(b) **वार्ता और संघर्ष समाधान कौशल:**
अधिकारी को विभिन्न पक्षों के बीच मध्यस्थता करनी होती है। इसमें संतुलन बनाना और साझा सहमति प्राप्त करना आवश्यक होता है।
उदाहरण: जब स्थानीय समुदाय और प्रशासन के बीच भूमि विवाद होता है, तो एक कुशल अधिकारी दोनों पक्षों की चिंताओं को समझकर समाधान निकाल सकता है।

उदाहरण: स्वच्छ भारत मिशन की सफलता केवल नीति के क्रियान्वयन पर नहीं, बल्कि जिला कलेक्टरों की समझाने की क्षमता और जन भागीदारी को प्रेरित करने की क्षमता पर भी निर्भर थी। जब अधिकारियों ने सेवा की भावना और संप्रेषणीयता के साथ गांवों, जनप्रतिनिधियों और NGO को स्वच्छता की ओर प्रेरित किया, तभी अभियान जमीनी स्तर पर सफल हुआ।

सहमति केवल किसी को मना लेने की प्रक्रिया नहीं, बल्कि भरोसा निर्माण और सहयोग सुनिश्चित करने की कला है। एक लोक सेवक के लिए सहानुभूति और ईमानदारी (attitude) तथा तर्कशीलता और संवाद (aptitude) दोनों का सामंजस्य आवश्यक है। जब दोनों का विकास संतुलित रूप से होता है, तभी वह प्रभावी प्रशासनिक सुधार कर सकता है, नीतियों को लागू कर सकता है, और समाज में सकारात्मक परिवर्तन ला सकता है।

✓ Download the model answers of the test paper from www.chronicleias.in
✓ Watch the detailed video discussions of the questions in our website www.chronicleias.in
✓ For more details, call: 9953007636/9953007637 or WhatsApp: 9582219048

खंड - ब

प्रश्न.11 राजनीतिक अभिवृत्ति से आप क्या समझते हैं? एक सिविल सेवक में किस प्रकार का राजनीतिक दृष्टिकोण वांछनीय है?

उत्तर– राजनीतिक अभिवृत्ति से तात्पर्य किसी व्यक्ति की राजनीतिक विचारधाराओं, संस्थाओं, दलों और शासन प्रक्रियाओं के प्रति मानसिक प्रवृत्ति या झुकाव से है। यह अभिवृत्ति यह दर्शाती है कि कोई व्यक्ति राजनीतिक घटनाओं और निर्णयों को किस प्रकार देखता, परखता और प्रतिक्रिया करता है। यह दृष्टिकोण व्यक्ति के अनुभव, शिक्षा, सामाजिक परिवेश और मीडिया के प्रभाव से निर्मित होता है।

राजनीतिक अभिवृत्ति के प्रकार:

राजनीतिक अभिवृत्तियां एक स्पेक्ट्रम के रूप में देखी जा सकती हैं:

1. **उग्रवादी (Radical):** मौलिक और व्यापक स्तर पर व्यवस्था में बदलाव की पक्षधर।
2. **उदारवादी (Liberal):** व्यवस्था के भीतर प्रगतिशील सुधारों का समर्थन करने वाली।
3. **मध्यमार्गी (Moderate):** परंपरा और परिवर्तन के बीच संतुलित दृष्टिकोण रखने वाली।
4. **रूढ़िवादी (Conservative):** परंपराओं को बनाए रखने और धीरे-धीरे परिवर्तन की पक्षधर।
5. **पुनरुत्थानवादी (Reactionary):** अतीत की सामाजिक-राजनीतिक व्यवस्थाओं को पुनर्स्थापित करना चाहने वाली।

लोक सेवकों हेतु आवश्यक राजनीतिक अभिवृत्ति:

भारत जैसे लोकतांत्रिक और बहुलतावादी देश में, एक लोक सेवक की राजनीतिक अभिवृत्ति को संवैधानिक नैतिकता और प्रशासनिक आचरण के अनुरूप होना चाहिए।

1. **राजनीतिक निष्पक्षता (Political Neutrality):** लोक सेवक को दलगत राजनीति से दूर रहकर सरकारी नीतियों को निष्पक्षता से लागू करना चाहिए। यह सभी वर्गों को एक समान सेवा प्रदान करने की आधारशिला है।
2. **संवैधानिक मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता:** धर्मनिरपेक्षता, समानता, स्वतंत्रता और न्याय जैसे संवैधानिक आदर्शों के प्रति निष्ठा आवश्यक है। किसी भी राजनीतिक विचारधारा की बजाय संविधान के प्रति वफादारी सर्वोच्च होनी चाहिए।
3. **वस्तुनिष्ठता और निष्पक्षता (Objectivity - Impartiality):** निर्णय लेते समय तथ्यों, योग्यता और जनहित को प्राथमिकता दी जानी चाहिए, न कि व्यक्तिगत या राजनीतिक दबाव को।
4. **नैतिकता और व्यावसायिक ईमानदारी:** पारदर्शिता, जवाबदेही और ईमानदारी जैसे गुणों को अपनाते हुए राजनीतिक दबावों का साहसपूर्वक प्रतिरोध करना चाहिए।
5. **निर्वाचित नेतृत्व के साथ रचनात्मक सहयोग:** राजनीतिक रूप से तटस्थ रहते हुए भी, लोक सेवकों को लोकतांत्रिक ढंग से चुने गए जनप्रतिनिधियों के साथ नीतियों के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए सहयोग करना चाहिए।

एक लोक सेवक की राजनीतिक अभिवृत्ति को निष्पक्षता, संवैधानिक निष्ठा और नैतिक जिम्मेदारी को प्रतिबिंबित करना चाहिए। ऐसी अभिवृत्ति उसे राज्य का निष्पक्ष उपकरण बनाती है, जिससे सुशासन और लोकतांत्रिक मूल्यों को मजबूती मिलती है। राजनीतिक घटनाक्रमों की समझ रखते हुए भी लोक सेवक को दलगत दृष्टिकोण से स्वयं को अलग रखना चाहिए ताकि वह विश्वसनीय, उत्तरदायी और न्यायपूर्ण प्रशासन दे सके।

✓ Download the model answers of the test paper from www.chronicleias.in
✓ Watch the detailed video discussions of the questions in our website www.chronicleias.in
✓ For more details, call: 9953007636/9953007637 or WhatsApp: 9582219048

Chronicle ias

प्रश्न.12 लोक सेवा के प्रति एक सिविल सेवक के समर्पण भाव को प्रभावित करने वाले कारकों पर चर्चा करें। समर्पण भाव बनाए रखने में एक सिविल सेवक को किन चुनौतियों का सामना करना पड़ता है?

उत्तर- लोक सेवा में समर्पण भाव (Dedication) का तात्पर्य जनता के हितों की सेवा के प्रति एक गहरी प्रतिबद्धता और उत्तरदायित्व की भावना से है। यह सुशासन और प्रभावी प्रशासन की आधारशिला होती है। हालांकि यह समर्पण भाव अनेक आंतरिक एवं बाह्य कारकों से प्रभावित होता है और व्यावहारिक शासन प्रणाली में अक्सर कठिन चुनौतियों से जूझता है।

लोक सेवक के समर्पण भाव को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकः

1. **नैतिक एवं चारित्रिक मूल्य :** व्यक्तिगत ईमानदारी, करुणा और न्याय के प्रति प्रतिबद्धता समर्पण भाव को मजबूती देती है। यह मूल्य प्रायः परिवार, शिक्षा और प्रशिक्षण से विकसित होते हैं।
2. **उद्देश्य और सेवा भावना की स्पष्टताः** यदि लोक सेवक को राष्ट्र निर्माण और जनसेवा के उच्च आदर्शों में आस्था है, तो उसके भीतर आत्म-प्रेरणा बनी रहती है।
3. **संगठनात्मक वातावरणः** सहयोगी कार्यस्थल, प्रोत्साहित करने वाला नेतृत्व और पारदर्शी व्यवस्था कार्य के प्रति उत्साह और प्रतिबद्धता को बनाए रखते हैं।
4. **प्रशिक्षण एवं व्यावसायिक विकासः** श्रेष्ठ व्यवस्थाओं की जानकारी और सतत सीखने की प्रक्रिया कार्यक्षमता को बढ़ाती है और सेवा के प्रति उत्साह बनाए रखती है।
5. **मान्यता एवं पुरस्कार प्रणालीः** समय पर प्रशंसा, निष्पक्ष मूल्यांकन और कैरियर में प्रगति समर्पण भाव को सुदृढ़ करती है।
6. **जनता से संवाद और उत्तरदायित्वः** जब लोक सेवक को अपने कार्य का सीधा प्रभाव जनता पर दिखता है, तो उसकी सेवा भावना और मजबूत होती है।

समर्पण भाव बनाए रखने में आने वाली चुनौतियांः

1. **राजनीतिक दबाव और हस्तक्षेपः** बार-बार की राजनीतिक दखलअंदाजी कार्य की स्वतंत्रता और नैतिकता को बाधित करती है।
2. **भ्रष्टाचार एवं लालफीताशाहीः** अनैतिकता और जटिल प्रक्रियाएं आदर्शवाद को कमजोर करती हैं और मनोबल गिराती हैं।
3. **कार्यभार और संसाधनों की कमी :** अपर्याप्त संसाधनों के साथ अत्यधिक कार्य समर्पण भाव को प्रभावित कर सकते हैं।
4. **कार्य और निजी जीवन का असंतुलनः** अत्यधिक तनाव और थकान व्यक्तिगत और पेशेवर जीवन दोनों पर असर डालते हैं।
5. **स्थानांतरण और पोस्टिंग संबंधी समस्याएं :** मनमाने और बार-बार के तबादले कार्य की निरंतरता को बाधित करते हैं और भावनात्मक जुड़ाव को कम कर देते हैं।

एक लोक सेवक का समर्पण भाव उसके नैतिक मूल्यों, संस्थागत समर्थन और आंतरिक प्रेरणा पर आधारित होती है, परंतु उसे राजनीतिक और व्यवस्थागत चुनौतियों से लगातार जूझना पड़ता है।

ऐसे में आवश्यक है कि नैतिक प्रशिक्षण, पारदर्शी प्रणाली, तथा संगठनात्मक सहारा मजबूत किया जाए ताकि लोक सेवक निरंतर जनहित में समर्पित रह सके और सुशासन सुनिश्चित किया जा सके।

प्रश्न.13 स्वामी विवेकानंद के व्यावहारिक वेदांत और लोक सेवकों के लिए इसकी प्रासंगिकता पर चर्चा करें।

उत्तर– स्वामी विवेकानंद का व्यावहारिक वेदांत, वेदांत दर्शन को कर्म और सेवा के माध्यम से जीवन में उतारने का आह्वान है। यह दर्शन आत्मा की दिव्यता, मानव सेवा को ईश्वर सेवा मानने, निःस्वार्थ कर्म, तथा नैतिक साहस पर आधारित है।

लोक सेवकों के लिए यह एक नैतिक और आध्यात्मिक ढांचा प्रस्तुत करता है जो उन्हें कर्तव्यनिष्ठ, करुणामय और उद्देश्यपूर्ण सेवा के लिए प्रेरित करता है।

व्यावहारिक वेदांत का सारः

1. **व्यक्ति में दिव्यताः** हर मानव में ईश्वर का वास है। इसीलिए, किसी की सेवा दया या उपकार नहीं, बल्कि ईश्वर की सेवा है।"शिव ज्ञान से जीव सेवा" – जीवों में शिव को देखना और उनकी सेवा करना।
2. **कर्म ही पूजा हैः** कर्म स्वार्थ के लिए नहीं, बल्कि समाज के कल्याण हेतु किया जाना चाहिए। सेवा भाव ही सच्चा धर्म है।
3. **निःस्वार्थता और अनासक्तिः** अहंकार और व्यक्तिगत लाभ से मुक्त होकर कार्य करना चाहिए। मनुष्य के कल्याण को ही उद्देश्य बनाना चाहिए।
4. **सर्वभूत समता और भाईचाराः** जाति, धर्म या वर्ग के भेदभाव से ऊपर उठकर सबकी सेवा करनी चाहिए।
5. **निडरता और आत्मबलः** अन्याय का विरोध करने के लिए नैतिक साहस और आध्यात्मिक शक्ति आवश्यक है।

लोक सेवकों के लिए प्रासंगिकताः

1. **नैतिक आचरण को प्रोत्साहनः** विवेकानंद का वेदांत लोक सेवकों को ईमानदारी, निःस्वार्थता और सेवा भावना से कार्य करने के लिए प्रेरित करता है।
2. **सामाजिक प्रतिबद्धता को मजबूत करता हैः** यह दर्शन याद दिलाता है कि प्रशासन का लक्ष्य हाशिए पर खड़े लोगों का उत्थान है।
3. **आंतरिक प्रेरणा का स्रोतः** सेवा को व्यक्तिगत लाभ नहीं, आत्मिक संतोष का माध्यम मानने की भावना विकसित होती है।
4. **न्याय के लिए साहस और जवाबदेहीः** यह दर्शन लोक सेवकों को भ्रष्टाचार और अन्याय के विरुद्ध दृढ़ता से खड़े रहने की शक्ति देता है।
5. **समावेशी दृष्टिकोण को बढ़ावाः** भारत जैसे विविधतापूर्ण समाज में "एकता में अनेकता" की भावना को साकार करने में मदद करता है।

स्वामी विवेकानंद का व्यावहारिक वेदांत लोक सेवकों के लिए समग्र, नैतिक और आध्यात्मिक मार्गदर्शन प्रदान करता है। इसे आत्मसात कर वे संकीर्ण स्वार्थों से ऊपर उठकर सदाचार, सामाजिक न्याय, और राष्ट्र निर्माण के प्रभावी साधन बन सकते हैं।

यह दर्शन उन्हें एक कर्तव्यपरायण सेवक से एक जागरूक कर्मयोगी बनने की प्रेरणा देता है।

✓ Download the model answers of the test paper from www.chronicleias.in
✓ Watch the detailed video discussions of the questions in our website www.chronicleias.in
✓ For more details, call: 9953007636/9953007637 or WhatsApp: 9582219048

प्रश्न.14 प्लेटो के अनुसार प्रमुख गुण क्या हैं? शासन में व्यक्तिगत व्यवहार के साथ-साथ सार्वजनिक आचरण के लिए वे क्यों महत्वपूर्ण हैं?

उत्तर- प्राचीन ग्रीक दार्शनिक प्लेटो ने अपनी कृति "The Republic" में चार प्रमुख (Cardinal) सद्गुणों की व्याख्या की है – बुद्धि (Wisdom), साहस (Courage), संयम (Temperance), और न्याय (Justice)।

ये सद्गुण एक न्यायपूर्ण व्यक्ति और व्यवस्थित समाज की नींव हैं तथा व्यक्तिगत नैतिकता और सार्वजनिक प्रशासन दोनों के लिए आज भी प्रासंगिक हैं।

प्लेटो के चार प्रमुख सद्गुण:

1. **बुद्धि (Wisdom/Phronesis):** यह व्यावहारिक ज्ञान, विवेक और उचित निर्णय लेने की क्षमता है। शासन में यह नीतियों और कानूनों को जनहित में बनाने की योग्यता है।
2. **साहस (Courage/Andreia):** भय या विरोध के बावजूद सत्य और मूल्यों के लिए खड़े रहने की शक्ति। एक लोक सेवक के लिए यह भ्रष्टाचार, दबाव और अन्याय का सामना करने की नैतिक शक्ति है।
3. **संयम (Temperance/Sophrosyne):** यह आत्म-नियंत्रण और संतुलन की भावना है, जिससे इच्छाओं और विवेक में समरसता बनी रहती है। लोक जीवन में यह पद और शक्ति का दुरुपयोग न करने की भावना को दर्शाता है।
4. **न्याय (Justice/Dikaiosyne):** प्लेटो के अनुसार यह सर्वोच्च सद्गुण है। जब प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्तव्य का निष्पक्षता से पालन करता है, तभी न्याय की स्थापना होती है। शासन व्यवस्था में इसका अर्थ है – निष्पक्षता, समानता और विधि के समक्ष सभी के लिए एकसमान व्यवहार।

व्यक्तिगत आचरण और शासन व्यवस्था में इनका महत्व:

व्यक्तिगत जीवन में:

- ये सद्गुण एक व्यक्ति में नैतिक चरित्र, विवेकशीलता और ईमानदारी का विकास करते हैं।
- ये व्यक्ति को एक उत्तरदायी नागरिक और नैतिक नेतृत्वकर्ता बनाते हैं।

लोक प्रशासन और शासन में:

- **बुद्धि:** तथ्यों और तर्कों के आधार पर नीति-निर्णय में सहायता करती है।
- **साहस:** गलत के विरुद्ध खड़े होने और नैतिक दायित्व निभाने में मदद करता है।
- **संयम:** शक्ति और अधिकार का मर्यादित प्रयोग सुनिश्चित करता है।
- **न्याय:** निष्पक्षता और समता पर आधारित नीति और कार्यक्रम लागू करने में सहायक है।

प्लेटो के कार्डिनल सद्गुण केवल दार्शनिक आदर्श नहीं हैं, बल्कि व्यावहारिक नैतिक मार्गदर्शक सिद्धांत हैं। इनका पालन व्यक्तिगत ईमानदारी और संस्थागत उत्तरदायित्व के बीच सामंजस्य स्थापित करता है और एक नैतिक, उत्तरदायी और न्यायसंगत शासन को सुनिश्चित करता है। इसलिए, एक लोक सेवक के लिए इन सद्गुणों को अपनाना सुशासन की दिशा में अनिवार्य कदम है।

✓ Download the model answers of the test paper from www.chronicleias.in
✓ Watch the detailed video discussions of the questions in our website www.chronicleias.in
✓ For more details, call: 9953007636/9953007637 or WhatsApp: 9582219048

प्रश्न.15 संगठनों में नैतिक मूल्य के रूप में पारदर्शिता को मजबूत किया जाना चाहिए क्योंकि इससे लागत की तुलना में लाभ अधिक मिलता है। चर्चा करें।

उत्तर- पारदर्शिता (Transparency) का अर्थ है – कार्यप्रणाली, निर्णय और सूचना को खुले और स्पष्ट रूप से साझा करना। यह केवल एक प्रशासनिक विशेषता नहीं, बल्कि एक नैतिक मूल्य है जो उत्तरदायित्व, ईमानदारी और विश्वास की नींव रखता है।

हालाँकि इससे कुछ तत्कालिक चुनौतियां और लागतें जुड़ी हो सकती हैं, लेकिन इसके दीर्घकालिक लाभ लोकतंत्र, प्रशासन और संस्थागत संस्कृति के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं।

पारदर्शिता के लाभः

1. **उत्तरदायित्व और विश्वास को बढ़ावाः** जैसे कि RTI (सूचना का अधिकार) या सरकारी पोर्टलों के माध्यम से सूचना साझा करने से नागरिकों का विश्वास बढ़ता है और अधिकारियों के विवेकाधीन निर्णयों पर अंकुश लगता है।
2. **भ्रष्टाचार और पक्षपात में कमीः**
   उदाहरणः ई-निविदा प्रणाली (e-tendering) के जरिए पारदर्शी खरीद प्रक्रिया अपनाने से भ्रष्टाचार की संभावना घटती है।
3. **सेवा वितरण में सुधारः**
   जैसे PDS (सार्वजनिक वितरण प्रणाली) में डिजिटल रिकॉर्ड और सोशल ऑडिट से पारदर्शिता बढ़ती है और रिसाव (leakage) कम होता है।
4. **जनभागीदारी को बढ़ावाः**
   जब नीतियों के मसौदे सार्वजनिक किए जाते हैं और सुझाव मांगे जाते हैं (जैसे पर्यावरणीय मंजूरी), तो इससे सहभागी शासन को बढ़ावा मिलता है।
5. **नैतिक संगठनात्मक संस्कृति को बढ़ावाः** जब अधिकारियों को पता होता है कि उनके कार्यों की सार्वजनिक समीक्षा हो सकती है, तो वे स्वाभाविक रूप से अधिक उत्तरदायी और ईमानदार रहते हैं।

चुनौतियां और लागतः

- **प्रशासनिक भारः** डेटा संधारण, आरटीआई जवाब, ऑडिट प्रबंधन आदि से कार्यभार बढ़ता है – खासकर अल्प संसाधनों वाले विभागों में।
- **जानकारी के दुरुपयोग का जोखिमः** अधूरी या संदर्भहीन जानकारी (जैसे रक्षा खरीद में) के सार्वजनिक होने से गलतफहमियां या छवि को नुकसान हो सकता है।
- **संस्थागत प्रतिरोधः** उच्च पदस्थ अधिकारी या हितधारक पारदर्शिता से बच सकते हैं – अधिकार खोने या अनियमितताओं के उजागर होने के भय से।

पारदर्शिता को बोझ नहीं, बल्कि दीर्घकालिक निवेश के रूप में देखा जाना चाहिए – जो प्रशासन में विश्वास, दक्षता और नैतिकता की नींव रखती है। जैसे ई-गवर्नेंस, सिटीजन चार्टर, सोशल ऑडिट, और PM गति शक्ति जैसे डिजिटल प्लेटफॉर्म पारदर्शिता को सुदृढ़ करते हैं।

इसलिए, संगठनों को चाहिए कि वे प्रोएक्टिव डिस्क्लोजर, डिजिटल ट्रैकिंग और जवाबदेही प्रणाली को अपनाएँ ताकि पारदर्शिता के मूल्य को संस्थागत रूप में स्थापित किया जा सके।

पारदर्शिता केवल जानकारी साझा करने तक सीमित नहीं है, यह एक नैतिक आचरण है – जो अच्छे शासन के मूल में है।

प्रश्न.16 सार्वजनिक सेवा में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के उपयोग के नकारात्मक और सकारात्मक दोनों प्रभाव हो सकते हैं। एक सिविल सेवक के रूप में आप इस चुनौती से कैसे निपटेंगे।

उत्तर- कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) लोक सेवाओं की गुणवत्ता में क्रांतिकारी सुधार लाने की क्षमता रखती है – यह कार्यक्षमता, सटीकता और गति को बढ़ाती है। हालांकि, इसके साथ कुछ जोखिम भी जुड़े होते हैं, जैसे कि एल्गोरिदमिक पक्षपात, डेटा गोपनीयता का उल्लंघन और नौकरियों का विस्थापन। एक सिविल सेवक को नवाचार और नैतिक जिम्मेदारी के बीच संतुलन बनाए रखना होता है।

सकारात्मक प्रभावः

- **कुशलता और गतिः** एआई-सक्षम चैटबॉट्स नगरपालिका शिकायत प्रणाली जैसी सेवाओं में शिकायत निवारण को बेहतर बनाते हैं।
- **पूर्वानुमान आधारित शासनः** एआई फसलों की विफलता या रोग फैलने का पूर्वानुमान लगा सकता है, जिससे कृषि और सार्वजनिक स्वास्थ्य में समय पर हस्तक्षेप किया जा सकता है।
- **डेटा-आधारित नीतियां:** सामाजिक-आर्थिक डेटा का विश्लेषण करने वाले उपकरण कल्याणकारी योजनाओं को बेहतर ढंग से लक्षित करने में सहायक होते हैं (जैसे DBT में लाभार्थियों की पहचान में AI की मदद)।

नकारात्मक प्रभावः

- **पक्षपात और भेदभावः** यदि AI को दोषपूर्ण डेटा पर प्रशिक्षित किया गया हो, तो यह योग्य नागरिकों को लाभ से वंचित कर सकता है (जैसे पक्षपातपूर्ण पैटर्न के आधार पर नौकरी के आवेदनों या ऋण लाभार्थियों को अस्वीकृत करना)।
- **पारदर्शिता की कमीः** निर्णय लेने की अपारदर्शी प्रक्रिया उत्तरदायित्व को कमजोर करती है (जैसे ई-गवर्नेंस में बिना स्पष्टीकरण के स्वचालित स्कोरिंग)।
- **नौकरी विस्थापनः** प्रशासनिक कार्यों का स्वचालन कम कौशल वाले कर्मचारियों को हाशिए पर डाल सकता है, जिससे उनके जीवनयापन पर प्रभाव पड़ता है।

एक सिविल सेवक के रूप में क्या किया जाना चाहिएः

1. **मानव निगरानी सुनिश्चित करनाः** एआई का उपयोग निर्णय सहायता उपकरण के रूप में करें, न कि मानव निर्णय के स्थान पर – विशेषकर न्याय, स्वास्थ्य या कल्याण जैसे संवेदनशील क्षेत्रों में।
2. **नैतिक AI का प्रचारः** निष्पक्षता, उत्तरदायित्व और भेदभाव रहित कार्यप्रणाली सुनिश्चित करने के लिए नैतिक दिशानिर्देश लागू करें।
3. **डेटा गोपनीयता की रक्षाः** यह सुनिश्चित करें कि नागरिकों के डेटा को गुमनाम और सुरक्षित रखा जाए तथा डिजिटल शासन ढांचे के तहत संरक्षित किया जाए।
4. क्षमता निर्माण में निवेशः प्रभावित कर्मचारियों को पुनः प्रशिक्षण दें और डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा दें ताकि तकनीकी अंतर को पाटा जा सके।
5. **समावेशी डिजाइन को बढ़ावा देनाः** यह सुनिश्चित करने के लिए सामाजिक वैज्ञानिकों, नैतिकतावादियों और नागरिक समाज के साथ सहयोग करें कि AI उपकरण सामाजिक वास्तविकताओं को प्रतिबिंबित करें।

निष्कर्षतः, एक सिविल सेवक के रूप में नवाचार और नैतिक सुरक्षा के बीच संतुलन बनाना आवश्यक है। AI को जिम्मेदारी के साथ अपनाना चाहिए, जो समानता, पारदर्शिता और जवाबदेही के सिद्धांतों द्वारा निर्देशित हो – ताकि यह वास्तव में जनहित की सेवा कर सके।

✓ Download the model answers of the test paper from www.chronicleias.in
✓ Watch the detailed video discussions of the questions in our website www.chronicleias.in
✓ For more details, call: 9953007636/9953007637 or WhatsApp: 9582219048

प्रश्न.17 एक वरिष्ठ लोक प्रशासक श्री शर्मा एक बड़े बुनियादी ढांचा परियोजना की निगरानी कर रहे हैं। निविदा प्रक्रिया के दौरान, उनके एक करीबी मित्र की निर्माण कंपनी अनुबंध के लिए पात्र है। श्री शर्मा जानते हैं कि अपने मित्र को अनुबंध देना हितों के टकराव (conflict of interest) की स्थिति उत्पन्न कर सकता है, हालांकि कंपनी की बोली प्रतिस्पर्धी है। श्री शर्मा व्यक्तिगत निष्ठा और लोक सेवा के कर्तव्य के बीच दुविधा में हैं।

प्रश्नः

1. **इस स्थिति में श्री शर्मा को कौन से नैतिक सिद्धांतों को प्राथमिकता देनी चाहिए?**
2. **श्री शर्मा पारदर्शिता और उत्तरदायित्व कैसे सुनिश्चित कर सकते हैं?**
3. **लोक प्रशासन में हितों के टकराव को रोकने के लिए क्या उपाय किए जा सकते हैं?**

उत्तर– श्री शर्मा एक ऐसी नैतिक दुविधा में हैं जहाँ उन्हें व्यक्तिगत संबंधों और सार्वजनिक कर्तव्यों के बीच संतुलन बनाना है। इस स्थिति में उनके निर्णय का असर न केवल उनकी व्यक्तिगत साख पर पड़ेगा, बल्कि लोक प्रशासन में लोगों के भरोसे पर भी।

1. श्री शर्मा को किन नैतिक सिद्धांतों को प्राथमिकता देनी चाहिए?

- **पक्षपातरहितता (Impartiality):** उन्हें बिना किसी पूर्वाग्रह या व्यक्तिगत संबंधों के, सभी पात्र बोलीदाताओं को समान अवसर देना चाहिए।
- **सत्यनिष्ठा (Integrity):** लोक सेवा में पारदर्शिता और नैतिक आचरण आवश्यक हैं; व्यक्तिगत हितों को सार्वजनिक हित से ऊपर नहीं रखा जा सकता।
- **लोकहित (Public Interest):** सभी निर्णयों का आधार केवल जनता का हित और संसाधनों का न्यायसंगत उपयोग होना चाहिए।
- **पारदर्शिता और निष्पक्षता:** निविदा प्रक्रिया इस प्रकार होनी चाहिए कि वह सार्वजनिक रूप से निष्पक्ष दिखाई दे।
- **उत्तरदायित्व (Accountability):** अपने निर्णयों के लिए वे उच्चाधिकारियों और जनता के प्रति जवाबदेह हैं।

2. श्री शर्मा पारदर्शिता और उत्तरदायित्व कैसे सुनिश्चित करें?

- **स्वयं को प्रक्रिया से अलग करना (Recusal):** हितों के टकराव से बचने के लिए श्री शर्मा को निर्णय प्रक्रिया से स्वयं को अलग कर लेना चाहिए।
- **स्वतंत्र मूल्यांकन समिति (Independent Review Committee):** एक निष्पक्ष, योग्य और स्वतंत्र समिति को बोली का मूल्यांकन करना चाहिए।
- **दस्तावेजीकरण (Documentation):** निविदा प्रक्रिया, बोली मूल्यांकन और निर्णय सभी का विधिवत रिकॉर्ड रखना चाहिए ताकि ऑडिट और जांच संभव हो।
- **सार्वजनिक सूचना (Public Disclosure):** चयन प्रक्रिया, समय-सीमा, मानदंड आदि को सार्वजनिक करना पारदर्शिता को बढ़ाता है।

3. लोक प्रशासन में हितों के टकराव को रोकने के उपाय:

- **हितों की अनिवार्य घोषणा (Mandatory Declaration of Interests):** अधिकारियों को किसी भी निजी या वित्तीय हित की जानकारी समय पर देनी चाहिए।
- **नैतिकता प्रशिक्षण और आचार संहिता (Ethics Training - Code of Conduct):** अधिकारियों को नियमित रूप से नैतिक निर्णयों और हित-संघर्ष से निपटने के उपायों पर प्रशिक्षित किया जाना चाहिए।
- **स्वतंत्र निगरानी संस्थाएं (Independent Oversight):** सतर्कता विभाग और लोकपाल जैसी संस्थाओं को मजबूत करना चाहिए।
- **स्थानांतरण प्रणाली (Rotational Postings):** संवेदनशील पदों पर लंबे समय तक तैनाती से टकराव की संभावना बढ़ती है; इसे नियमित रूप से बदला जाना चाहिए।
- **व्हिसलब्लोअर संरक्षण (Whistleblower Protection):** अनैतिक आचरण की रिपोर्ट करने वाले अधिकारियों को संरक्षित और प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

श्री शर्मा को न केवल नैतिक रूप से सही निर्णय लेना चाहिए, बल्कि यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि उनका निर्णय सार्वजनिक रूप से नैतिक प्रतीत हो। सार्वजनिक विश्वास को बनाए रखने के लिए पारदर्शिता, निष्पक्षता और ईमानदारी को प्राथमिकता देना प्रत्येक सिविल सेवक की जिम्मेदारी है ख्र भले ही इसके लिए व्यक्तिगत असुविधा क्यों न उठानी पड़े।

Chronicle ias

प्रश्न.18 सिविल सेवाओं में निजी हितों और सार्वजनिक जिम्मेदारी के बीच संतुलन बनाए रखने में नैतिकता की भूमिका पर चर्चा करें। ऐसी स्थितियों में नैतिक दुविधाओं को कैसे हल किया जा सकता है।

उत्तर– नैतिकता (Ethics) नागरिक सेवाओं की आधारशिला है, जो यह सुनिश्चित करती है कि सिविल सेवक निजी हितों की बजाय सार्वजनिक हित को प्राथमिकता दें। यह उन्हें निष्पक्षता, ईमानदारी और उत्तरदायित्व के साथ निर्णय लेने में मार्गदर्शन देती है।

नागरिक सेवाओं में नैतिकता की भूमिका:

1. **नैतिक आचरण का मार्गदर्शन:** ईमानदारी, निष्पक्षता और वस्तुनिष्ठता जैसे नैतिक मूल्य अधिकारियों को रिश्तेदारों, पूर्व नियोक्ताओं या परिचितों को अनुचित लाभ देने से रोकते हैं।
2. **सत्ता के दुरुपयोग से रोकथाम:** नैतिक सोच यह सुनिश्चित करती है कि विवेकाधीन शक्तियों का दुरुपयोग न हो, जैसे सरकारी जमीन का गलत आवंटन।
3. **सार्वजनिक विश्वास की रक्षा:** जनता सिविल सेवकों से निष्कलंक और निःस्वार्थ सेवा की अपेक्षा करती है। पारदर्शी और नैतिक निर्णय प्रक्रिया से जनता का भरोसा कायम रहता है।
4. **व्यावसायिक ईमानदारी बनाए रखना:** यदि कोई अधिकारी किसी ऐसे निर्णय से जुड़ा हो जिससे उसका निजी हित जुड़ा है (जैसे किसी कंपनी में शेयरधारिता), तो नैतिकता की माँग है कि वह स्वयं को उस निर्णय से अलग करे या पारदर्शिता बनाए रखे।

ऐसी नैतिक दुविधाओं को कैसे सुलझाया जा सकता है?

1. **संवैधानिक मूल्यों का पालन:** संविधान की उद्देशिका, मूल कर्तव्य और नीति निदेशक तत्व नैतिक दिशा प्रदान करते हैं।
2. **आचार संहिता का अनुपालन:** सेवा नियम और आचार संहिता दुविधा की स्थितियों में स्पष्ट मार्गदर्शन देती हैं (जैसे–उपहार की सीमाएं, पद का उपयोग)।
3. **निर्णय प्रक्रिया से हटना (Recusal):** जहाँ निजी हित जुड़े हों, वहाँ निष्पक्षता सुनिश्चित करने हेतु अधिकारी को उस निर्णय प्रक्रिया से हट जाना चाहिए।
4. **संस्थागत परामर्श लेना:** वरिष्ठ अधिकारियों या विभागीय नैतिकता समितियों से परामर्श लेना निष्पक्ष और विवेकपूर्ण निर्णय लेने में सहायक होता है।
5. **नैतिक परीक्षणों का प्रयोग:**
   - **प्रचार परीक्षण:** क्या मैं इस निर्णय को सार्वजनिक रूप से न्यायोचित ठहरा सकता हूँ?
   - **विवेक परीक्षण:** क्या मेरा अंतर्मन इस निर्णय को सही मानेगा?

नैतिकता नागरिक सेवाओं में निजी और सार्वजनिक भूमिकाओं के बीच संतुलन स्थापित करने के लिए एक मार्गदर्शक कंपास की तरह कार्य करती है। पारदर्शिता, संस्थागत तंत्र और आत्मनियंत्रण के माध्यम से नैतिक दुविधाओं का समाधान किया जा सकता है, जिससे निर्णय न केवल नैतिक रूप से सही हों, बल्कि प्रशासनिक रूप से भी सशक्त और न्यायसंगत हों।

प्रश्न.19 सूचना का अधिकार सार्वजनिक नीतियों के निर्माण और कार्यान्वयन के लिए आवश्यक है। यह नागरिकों को शासन प्रक्रिया में भागीदार बनाता है और अधिकारियों को सतर्क रखता है क्योंकि जवाबदेही सिर्फ एक आवेदन की दूरी पर है। क्या आप इस दृष्टिकोण से सहमत हैं? अपने उत्तर के लिए तर्क और औचित्य दीजिए।

उत्तर- हाँ, मैं इस मत से पूर्णतः सहमत हूँ कि सूचना का अधिकार (RTI) सार्वजनिक नीति निर्माण और उसके प्रभावी क्रियान्वयन के लिए अनिवार्य है। यह पारदर्शिता, जवाबदेही और जन भागीदारी को बढ़ावा देता है—जो किसी भी लोकतंत्र के मूल स्तंभ हैं।

RTI के पक्ष में तर्कः

1. **जनभागीदारी को मजबूत करता हैः** RTI नागरिकों को यह जानने का अधिकार देता है कि योजनाएँ कैसे बनाई और लागू की जा रही हैं। इससे नागरिक केवल लाभार्थी नहीं रहते, बल्कि जागरूक भागीदार बनते हैं।
   उदाहरणः मनरेगा में सामाजिक अंकेक्षण (Social Audit) RTI के माध्यम से हुई जानकारी से संभव हुए, जिससे समय पर मजदूरी भुगतान और अनियमितताओं का खुलासा हुआ।
2. **जवाबदेही को बढ़ावा देता हैः** जब अधिकारियों को यह ज्ञात होता है कि उनकी फाइल नोटिंग और निर्णय RTI के तहत सार्वजनिक हो सकते हैं, तो वे अधिक सतर्क और उत्तरदायी रहते हैं।
   उदाहरणः पर्यावरण मंजूरी जैसे मामलों में फाइल नोटिंग के प्रकटीकरण से अधिकारियों ने अधिक जिम्मेदारी से काम किया।
3. **नीति निर्माण को अधिक यथार्थवादी बनाता हैः** जानकारी प्राप्त कर जागरूक नागरिक नीतियों पर प्रतिक्रिया दे सकते हैं और व्यावहारिक समस्याओं की ओर ध्यान आकर्षित कर सकते हैं।
   उदाहरणः RTI कार्यकर्ताओं के इनपुट से आधार (Aadhaar) की कार्यप्रणाली में कमियाँ उजागर हुई, जिससे डेटा सुरक्षा को लेकर सुधार हुए।
4. **भ्रष्टाचार और शक्ति के दुरुपयोग पर रोकः** सूचना तक पहुँच भ्रष्टाचार को उजागर करने और शक्तियों के दुरुपयोग को रोकने में सहायक है।
   उदाहरणः RTI के माध्यम से राशन वितरण, शिक्षक नियुक्ति जैसे क्षेत्रों में घोटाले उजागर हुए और सुधारात्मक कदम उठाए गए।
5. **सेवा वितरण में कुशलता लाता हैः** जब अधिकारी जानते हैं कि उनकी लापरवाही पर सवाल उठ सकता है, तो वे सेवाओं को समय पर और प्रभावी ढंग से प्रदान करने की कोशिश करते हैं।
   उदाहरणः पासपोर्ट या पेंशन मामलों में RTI लगाने पर कार्य शीघ्रता से होता है।

RTI से जुड़ी चुनौतियांः

- अधिकारी वर्ग द्वारा प्रतिरोध और जानबूझकर उत्तरों में देरी।
- RTI कार्यकर्ताओं को धमकियाँ या हमला।
- हालिया संशोधनों से सूचना आयोगों की स्वतंत्रता में कटौती।

RTI केवल एक कानूनी अधिकार नहीं, बल्कि एक लोकतांत्रिक उपकरण है जो सरकार और जनता के बीच की दूरी को कम करता है। यह नीति निर्माण को अधिक उत्तरदायी और क्रियान्वयन को अधिक पारदर्शी बनाता है। अतः सुशासन के लिए त्ज्प् को सशक्त और संरक्षित रखना अत्यंत आवश्यक है।

✓ Download the model answers of the test paper from www.chronicleias.in
✓ Watch the detailed video discussions of the questions in our website www.chronicleias.in
✓ For more details, call: 9953007636/9953007637 or WhatsApp: 9582219048

प्रश्न.20 कविता एक आदर्शवादी है। उसका मानना है कि, ईमानदारी सबसे अच्छी नीति है और इसे किसी भी कीमत पर पालन किया जाना चाहिए। एक दिन वह अपने गृहनगर जाने वाली ट्रेन में यात्रा कर रही थी। उसने टिकट परीक्षक को बिना टिकट यात्रियों से रिश्वत मांगते और लेते हुए पाया। उसने उसके अवैध कार्यों के लिए उससे बहस की - लेकिन इसके बजाय टिकट परीक्षक ने उसके खिलाफ एक सरकारी कर्मचारी के काम में हस्तक्षेप करने का आरोप लगाते हुए शिकायत दर्ज कराई।

उपरोक्त परिस्थितियों के आलोक में कविता के आचरण पर टिप्पणी करें।

उत्तर- कविता का आचरण नैतिक आदर्शवाद की मजबूत प्रतिबद्धता को दर्शाता है। उन्होंने यह सिद्ध किया कि ईमानदारी और सत्यनिष्ठा को परिस्थितियों की परवाह किए बिना निभाया जाना चाहिए। उनका व्यवहार व्यक्तिगत और सार्वजनिक जीवन में नैतिक साहस का उदाहरण है।

कविता द्वारा प्रदर्शित नैतिक गुण:

1. **नैतिक साहस (Moral Courage):** कविता ने भ्रष्टाचार का विरोध करते हुए असहज स्थिति में भी साहस दिखाया। यह न्याय और सत्य की रक्षा से जुड़ा नैतिक मूल्य है।
2. **सत्यनिष्ठा और आदर्शवाद:** "ईमानदारी सर्वोत्तम नीति है" – इस विश्वास के साथ उनका व्यवहार 'कर्तव्यनिष्ठ नैतिकता' (Deontological Ethics) पर आधारित था, जो परिणामों की परवाह किए बिना सही कार्य करने पर बल देता है।
3. **लोकहित की भावना:** उन्होंने केवल अपनी नहीं, बल्कि सभी यात्रियों की ओर से आवाज उठाई, जिससे यह सिद्ध होता है कि वह एक सजग और जिम्मेदार नागरिक हैं।

व्यावहारिक पक्ष और संस्थागत उपाय जो नजरअंदाज हुए:

1. **रणनीतिक दृष्टिकोण की कमी:** हालांकि नैतिक रूप से उनका कृत्य सही था, लेकिन उन्होंने बिना साक्ष्य या समर्थन के सीधे टकराव कर लिया, जिससे वे प्रतिशोध का शिकार बन गईं।
2. **बेहतर विकल्प उपलब्ध थे:**

- वह रिश्वत लेते हुए का वीडियो/ऑडियो रिकॉर्ड कर सकती थी।
- रेलवे विजिलेंस विभाग या ग्रेवेंस पोर्टल पर शिकायत दर्ज करा सकती थी।
- अन्य यात्रियों का समर्थन लेकर सामूहिक विरोध कर सकती थी, जिससे व्यक्तिगत खतरा कम होता।

सार्वजनिक नैतिकता एवं शासन के लिए सीख:

1. **व्हिसलब्लोअर संरक्षण की आवश्यकता:** कविता का अनुभव दर्शाता है कि सत्य उजागर करने वालों को खतरे में डाला जा सकता है। इससे व्हिसलब्लोअर प्रोटेक्शन एक्ट के प्रभावी क्रियान्वयन की आवश्यकता स्पष्ट होती है।
2. **नागरिक भी नैतिक रूप से उत्तरदायी:** कविता का आचरण यह दिखाता है कि नैतिक प्रशासन केवल अधिकारियों की जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि प्रत्येक सजग नागरिक की भी भूमिका है।
3. **सार्वजनिक अधिकारियों द्वारा शक्ति का दुरुपयोग:** झूठी शिकायत दर्ज कराना यह दर्शाता है कि किस प्रकार सत्ता का दुरुपयोग नागरिकों की आवाज को दबाने के लिए किया जा सकता है।

कविता का आचरण नैतिक रूप से अत्यंत सराहनीय है। उन्होंने निजी जोखिम उठाकर भी सार्वजनिक हित में कदम उठाया। हालांकि, ऐसी परिस्थितियों में आदर्शवाद के साथ व्यवहारिक समझदारी भी जरूरी होती है। संस्थागत माध्यमों – जैसे RTI, शिकायत पोर्टल, या साक्ष्य एकत्र कर कार्रवाई – का उपयोग कर वे अधिक प्रभावशाली और सुरक्षित रूप से भ्रष्टाचार का विरोध कर सकती थी। अतः नैतिक आदर्शों को रणनीतिक विवेक के साथ जोड़ा जाना चाहिए।